आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/2018-20

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 8 अंक : 03 नवम्बर, 2020 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलपति प्रो. (डॉ.) विष्णु शर्मा

कुलपति सन्देश

कौशल विकास व दक्षता संवर्द्धन हमारा लक्ष्य

प्रिय किसान एवं पशुपालक भाईयो–बहनो। राम–राम सा।

नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति में विद्यार्थियों के लिए रोजगारन्मुख कौशल विकास को समुचित महत्व दिया गया है और पशुपालन देश में एक ऐसा सेक्टर है जो इन उद्देश्यों की पूर्ति कर सकता है। पशुचिकित्सा में पशु और पशु चिकित्सक के मध्य मूक संवाद होता है अतः कौशल विकास के द्वारा रोगों का निदान और उपचार महत्वपूर्ण हो जाता है। इसके अलावा पशुपालन में डेयरी, भेड़–बकरी पालन, मत्स्य व कुक्कुट पालन की वैज्ञानिक फॉर्मिंग से जहां एक ओर खाद्य सुरक्षा मिलती है वहीं दूसरी ओर दूध, मीट, अण्डा व मछली की आपूर्ति भी उपभोक्ताओं को भली प्रकार की जा सकती है। पशुपालन के क्षेत्र में कौशल विकास व दक्षता संवर्द्धन की असीम संभावनाएं है, क्योंकि राजस्थान राज्य पशुधन संपदा में भी देश में अव्वल स्थान पर है। देश में बकरी व ऊंट की संख्या में राजस्थान प्रथम स्थान पर है। भैसों में द्वितीय, भेड़ों में चौथे और गौवंश में छठे स्थान पर है। गत पशुगणना के मुकाबले मुर्गी पालन में 80 प्रतिशत बढ़ोतरी दर्ज की गई है। प्रदेश में पशुधन की अपार संख्या व गुणवत्ता के आधार पर राज्य सरकार व केन्द्र सरकार द्वारा इस क्षेत्र में कौशल विकास के कई कार्यक्रम प्रारम्भ किये गये है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् ने वेटरनरी विश्वविद्यालय बीकानेर में एक कौशल विकास केन्द्र की स्थापना की मंजूरी प्रदान की हैं इस केन्द्र द्वारा पशुपालन की कौशल विकास योजनाओं को अध्ययन और प्रशिक्षण कार्यों के लिए समुचित संसाधन सुलभ हो जायेंगे। नए कौशल विकास केन्द्र की स्थापना से पशुधन उत्पादों के मूल्य संवर्द्धन और पशुपालक एवं युवाओं की क्षमता निर्माण करके स्वरोजगार के अवसर सुलभ हो सकेगें इससे पशुपालकों की आजीविका में सुधार के साथ–साथ आय को दोगुनी करने में मदद मिलेगी। इसके अलावा राज्य के विभिन्न जिलों में स्थित पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्रों द्वारा कौशल विकास के लिए किसान और पशुपालकों के प्रशिक्षण कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। इन कार्यक्रमों द्वारा किसानों और पशुपालकों को जैविक पशुपालन, जैविक खेती, वैज्ञानिक तरीके से पशुपालन, पशुओं में संक्रामक व मौसमी बीमारियों से बचाव के उपायों और पशु पोषण विषयों पर प्रशिक्षण दिये जा रहे है। विश्वविद्यालय द्वारा दुग्ध पार्लर, मुर्गी पालन इकाईयों, पशु आहार उद्यमिता, गौशाला प्रबंधकों के कौशल संवर्द्धन के कार्यक्रमों का भी आयोजन किया जा रहा है। राज्य के तीनों संघटक महाविद्यालयों में पशुधन ज्ञान एवं उद्यमिता विकास सैल गठित करके विद्यार्थियों की दक्षता बढ़ाने का कार्य शुरू किया गया है। इस सैल के अन्तर्गत विद्यार्थियों का कौशल विकास करके उद्यमिता हेतु प्रेरित किया जा रहा है। इसमें व्यापार के नए माध्यमों, तकनीकों व नवीन आविष्कारों की जानकारी दी जायेगी। हमें पशुपालन के क्षेत्र में कौशल विकास व दक्षता सवंर्द्धन के लक्ष्य पथ पर अग्रसर होने के लिए मिलजुल कर प्रयास करने होगें।

(प्रो. {डॉ.} विष्णु शर्मा)

माननीय राज्यपाल श्री कलराज मिश्र द्वारा वेटरनरी विश्वविद्यालय के संविधान पार्क का ऑनलाइन शिलान्यास

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।
–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

माननीय राज्यपाल श्री कलराज मिश्र ने वेटरनरी विश्वविद्यालय के संविधान पार्क का किया ऑनलाइन शिलान्यास

माननीय राज्यपाल एवं वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री कलराज मिश्र ने 28 अक्टूबर को वेटरनरी विश्वविद्यालय में संविधान पार्क की ऑनलाइन आधारशिला रखी। समारोह के प्रारंभ में राज्यपाल श्री मिश्र ने भारतीय संविधान की प्रस्तावना और मूल कर्त्तव्यों का वाचन किया। माननीय राज्यपाल श्री कलराज मिश्र जी ने कहा है कि युवाओं में कौशल विकास के साथ संवैधानिक जागरूकता आज के समय की सबसे बड़ी जरूरत है। उन्होंने कहा कि कृषि और पशुपालन एक दूसरे के पूरक है। इस दृष्टि से पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय पशुपालन के कारगर उपायों के साथ विद्यार्थियों में कौशल उन्नयन और क्षमता विकसित करने के लिए भी निरन्तर प्रयास करें। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय 'आत्मनिर्भर युवा' की सोच को प्राथमिकता में रखते हुए अपने यहां अध्ययन–अध्यापन गतिविधियां क्रियान्वित करें। कुलाधिपति एवं राज्यपाल श्री मिश्र जी ने विश्वविद्यालय में संविधान पार्क की स्थापना को महत्वपूर्ण बताते हुए कहा कि भारतीय संविधान विश्वभर के लोकतंत्रों की सर्वश्रेष्ठ व्याख्या है। इसकी स्थापना से युवा पीढ़ी का संविधान की भावना से जुड़ाव होगा। उन्होंने कहा कि संविधान पार्क नागरिकों के मौलिक कर्त्तव्यों, नीति निर्देशक तत्वों और देश के प्रति जिम्मेदारी का अहसास करवाने का विद्यार्थियों के लिए एक सशक्त माध्यम बनेगा। माननीय राज्यपाल ने भारतीय संविधान को लिखे जाने के इतिहास की चर्चा करते हुए कहा कि देश के आदर्शों, उद्देश्यों व मूल्यों का यह संचित प्रतिबिंब है। उन्होंने कहा कि संविधान कोई जड़ दस्तावेज नहीं है, बल्कि समय के साथ यह निरंतर विकसित होता रहा है। उन्होने संविधान में रेखांकित चित्रकृतियां और मूर्धन्य चित्रकार नंदलाल बोस को याद करते हुए कहा कि भारतीय संस्कृति से जुड़ा संविधान हमारी ऐसी अमूल्य निधि है जिससे लोकतंत्र की हमारी जड़े सदा हरी रहती है। कुलाधिपति श्री मिश्र जी ने विश्वविद्यालयों में पशुधन की गुणवत्ता एवं स्वास्थ्य में सुधार के साथ ही पशुधन उत्पादों में गुणवत्ता और विपणन से जुड़े व्यवसायों में कौशल विकास के पाठ्यक्रमों का निर्माण किए जाने पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि जैविक पशु उत्पादक तकनीक में विद्यार्थियों को दक्ष कर उन्हें भविष्य के लिए तैयार कर सकते हैं। माननीय राज्यपाल ने कहा कि पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान शिक्षण, अनुसंधान और प्रसार में आधुनिक समय की आवश्यकताओं के अनुरूप पाठ्यक्रम अद्यतन किए जाने चाहिए। उन्होंने पशुपालन के साथ पशु उत्पादों के प्रसंस्करण विपणन से संबंधित व्यावसायिक कौशल प्रशिक्षण कार्यक्रमों के क्रियान्वयन पर भी जोर दिया। उन्होंने कहा कि यह महत्वपूर्ण है कि बीकानेर स्थित वेटनरी विश्वविद्यालय ने स्वदेशी गौवंश की नस्लों के संरक्षण और संवर्द्धन में देशभर में अपनी अलग पहचान बनायी है। उन्होंने नवाचारों के जरिए विश्वविद्यालय में व्यावसायिक शिक्षा को भविष्य की जरूरतों के हिसाब से विकसित करने पर जोर दिया। उन्होंने अपने सम्बोधन में कहा कि संविधान राष्ट्र को चलाने का महत्वपूर्ण दस्तावेज है, जिसमें भारत के आदर्श, उद्देश्य और मूल्यों का समावेश है। यह हमारी संस्कृति और सभ्यता की अमूल्य निधि है जो कि एकता और अखण्डता को बढ़ावा देती है। भारत का संविधान विश्व में लचीला और सर्वश्रेष्ठ है। राज्यपाल ने कहा कि राज्य के सभी विश्वविद्यालयों में युवा पीढ़ी को लोकतांत्रिक प्रक्रिया की जानकारी और मूल भावना से जोड़ने के उद्देश्य से संविधान पार्क का निर्माण किया जाएगा। राज्यपाल ने इस अवसर पर कहा कि कृषि और पशुपालन एक दूसरे के पूरक है जिसमें कौशल का विकास आज सबसे बड़ी जरूरत है। उन्होंने वेटरनरी विश्वविद्यालय में चल रहे कौशल विकास कार्यक्रमों की सराहना करते हुए कहा कि नित नए नवाचारों में तेजी से कार्य किए जाने से एक अलग पहचान बनी है। उन्होंने वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा राज्य में उपलब्ध करवाई जा रही रोग निदान और उपचार की आधुनिकतम उपकरणों से वशिष्ट और विशेषज्ञ सेवाओं को उच्च कोटि का बताया। देशी गौवंश के संरक्षण और उन्नयन कार्यों में यह विश्वविद्यालय अग्रणी बना है। राज्यपाल ने विद्यार्थियों के लिए कौशल विकास कार्यों, पशुपालन की बेहतरी और गुणवत्तायुक्त उत्पादन के प्रयासों से प्रतिस्पर्द्धात्मकता में वृद्धि पर प्रसन्नता जताई। प्रशिक्षज्ञण कार्यक्रमों में पशुपालक–किसानों के साथ वैज्ञानिकों के संवाद प्रक्रिया को एक अच्छा प्रयास बताया। इस अवसर पर वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने राजुवास के कौशल विकास में अभिनव नवाचार का प्रस्तुतीकरण किया। समारोह के विशिष्ट–अतिथि भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् के सहायक महानिदेशक (शिक्षा) डॉ. पी.एस. पांडे ने कहा कि कृषि–पशुपालन पाठ्यक्रमों में परिवर्तन कर रोजगारोन्मुखी बनाया गया है। इस अवसर पर राज्यपाल एवं कुलाधिपति श्री मिश्र ने विश्वविद्यालय के कौशल विकास केन्द्र का शिलान्यास भी किया। राज्यपाल महोदय ने समारोह में विश्वविद्यालय के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा प्रकाशित "उन्नत पशुधनः जैविक पशुपालन" और "वैज्ञानिक पशुधन एवं प्रबंधन" विषयों पर प्रशिक्षण संदर्शिकाओं का विमोचन किया। समारोह का संचालन प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने किया। वेटरनरी कॉलेज के अधिष्ठाता प्रो. आर.के. सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया। समारोह में अनेक विश्वविद्यालयों के कुलपतिगण, वेटरनरी विश्वविद्यालय के वित्त नियंत्रक अरविंद बिश्नोई, किसान–पशुपालक और विद्यार्थियों ने शिरकत की।

डेयरी तकनीकी संकाय शुरू करेगा वेटरनरी विश्वविद्यालय, जयपुर में खुलेगा वर्किंग डॉग सेन्टर

वेटरनरी विश्वविद्यालय डेयरी विज्ञान और प्रौद्योगिकी क्षेत्र में मानव संसाधन के क्षमता निर्माण के लिए डेयरी विज्ञान और प्रौद्योगिकी संकाय शुरू करेगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा की अध्यक्षता में 7 अक्टूबर को आयोजित अकादमिक परिषद की 16वीं बैठक में बताया कि डेयरी टेक्नोलॉजी ग्रामीण अर्थव्यवस्था, रोजगारसृजन और खाद्य पोषण सुरक्षा के लिए पशुपालन क्षेत्र का एक महत्वपूर्ण घटक है। इसलिए राज्य में दुग्ध प्रसंस्करण क्षमता बढ़ाने के लिए युवाओं के कुशल क्षमता विकास निर्माण के लिए वेटरनरी विश्वविद्यालय डेयरी तकनीकी संकाय प्रारंभ कर सर्टिफिकेट, डिप्लोमा पाठ्यक्रम प्रारंभ करेगा तथा साथ ही डिग्री पाठयक्रम प्रारंभ करने के प्रयास भी किये जायेगे। विश्वविद्यालय के स्नातकोत्तर पशुचिकित्सा शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान, जयपुर में स्थित संस्थान में वर्किंग डॉग सेन्टर शुरू किया जाएगा। इस केन्द्र पर सुरक्षा एवं पुलिस एजेन्सीज के श्वान पालन दस्तों के लिए 4 से 12 सप्ताह के लघु पाठ्यक्रम आयोजित कर सैद्वांतिक प्रशिक्षण प्रदान किया जा सकेगा।

वेटरनरी विश्वविद्यालय की नई पहल : राज्य में 'ई–पशुपालक चौपाल' का शुभारंभ

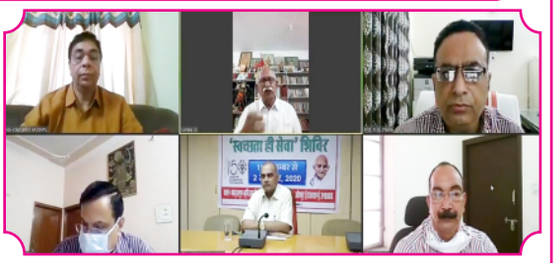

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की 151वीं जयंती पर 2 अक्टूबर को वेटरनरी विश्वविद्यालय द्वारा शुक्रवार को राजुवास "ई–पशुपालक चौपाल" का विधिवत् शुभारंभ राज्य के पशुपालन शासन सचिव डॉ. राजेश शर्मा ने किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने की। इस अवसर पर "महात्मा गांधी और पशु कल्याण" विषय पर परिचर्चा का आयोजन भी किया गया। पशुपालन सचिव डॉ. शर्मा ने कहा कि राष्ट्रपिता महात्मा गांधी की जयंती के अवसर पर "ई पशुपालन चौपाल" की शुरूआत राज्य के पशुपालन कल्याण की दिशा में एक मील का पत्थर साबित होगी। इस चौपाल के माध्यम से राज्य के सुदूर गांव–ढ़ाणी में बैठे किसान और पशुपालकों को इस सकारात्मक पहल का सीधा लाभ मिलेगा। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि महात्मा गांधी की सोच थी कि किसी देश की महानता का आंकलन लोगों को पशुओं के प्रति व्यवहार को लेकर किया जाता है। आज हमें ऐसी सोच रखकर कार्य करने की जरूरत है। उन्होंने कहा कि "ई–पशुपालक चौपाल" किसान और पशुपालकों के हित में एक श्रृंखलाबद्ध अभिनव पहल हैं। विशिष्ठ अतिथि डॉ. एस.के. सिंह, निदेशक, कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान जोधपुर (आई.सी.ए.आर.), भारतीय प्रशासनिक सेवा के पूर्व अधिकारी, श्री एस.एस. बिस्सा एवं हिन्दी साहित्य के प्रोफेसर डॉ. बृजरतन जोशी महात्मा गांधी और पशु कल्याण पर परिचर्चा के मुख्य वक्ता रहे। आयोजन सचिव प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया ने परिचर्चा के विषय का प्रवर्तन कर बताया कि "ई–पशुपालक चौपाल" का आयोजन प्रतिमाह के प्रत्येक द्वितीय और चतुर्थ बुधवार को अपरान्ह 12 से 1 बजे तक श्रृंखलाबद्ध किया जाएगा। इस कार्यक्रम को राजुवास के अधिकारिक फेसबुक पेजपर 5300 लोगों से अधिक लोगों ने देखा और सुना। यह कार्यक्रम 26 हजार 253 लोगों तक पहुंचा।

थनैला रोग के वैज्ञानिक तथ्यों और बचाव पर पूर्व कुलपति प्रो. ए. के. गहलोत की विशेषज्ञ वार्ता

प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा आयोजित राज्य स्तरीय ई–पशुपालक चौपाल में 28 अक्टूबर को पूर्व कुलपति एवं राज्यपाल सलाहकार परिषद् के सदस्य प्रो. ए.के. गहलोत ने थनैला रोग के कारण और बचाव के बारे में सारगर्भित और सरल रूप से वैज्ञानिक तथ्यों का खुलासा कर पशुपालकों को लाभान्वित किया। प्रो. गहलोत ने बताया कि देश में थनैला रोग से पशुओं में 10 से 15 प्रतिशत दुग्ध उत्पादन में कमी होने का अनुमान है। यह रोग दूध दुहने वाले हाथों व जमीन–मिट्टी के द्वारा फैल सकता है, अतः स्वच्छता रखना ही इससे बचाव है। प्रो. गहलोत ने इस रोग को लेकर पशुपालकों की शंकाओं का समाधान भी किया। कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने भी पशुपालकों को सम्बोधित किया। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूडिया ने चौपाल का संचालन किया।

पशुओं में मुंहपका-खुरपका रोग पर ई-पशुपालक चौपाल

प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा 14 अक्टूबर को ई–पशुपालक चौपाल में पशुओं में मुंहपका–खुरपका रोग पर परिचर्चा का आयोजन किया गया। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि वर्तमान परिस्थितियो मे ई–चौपाल डिजिटिल मोड पर संचार और संपर्क का एक सशक्त माध्यम है। इससे वेटरनरी के पशु चिकित्सा विशेषज्ञ और पशुपालन विभाग मिलकर पशुओं के स्वास्थ्य और पशुपालकों के कल्याण कार्यक्रमों को गांव–ढाणी तक पहुंचा रहे हैं। पशुपालन विभाग के अतिरिक्त निदेशक (स्वास्थ्य) डॉ. भवानी सिंह राठौड़ एवं अतिरिक्त निदेशक (मोनिटरिंग) डॉ. आनंद सेजरा ने राज्य की पशु कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी दी। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूडिया ने चौपाल का संचालन किया।

वेटरनरी पैथोलॉजी डायग्नोस्टिक्स क्षेत्र में प्रगति पर राष्ट्रीय वेबिनार

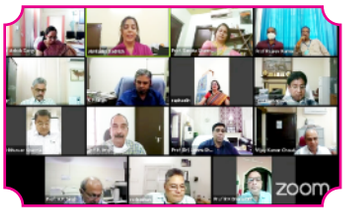

वेटरनरी विश्वविद्यालय एवं इन्डियन एसोसिएशन ऑफ वेटरनरी पैथोलॉजी के संयुक्त तत्वावधान में 14 अक्टूबर को "वेटरनरी पैथोलॉजी डायग्नोस्टिक्स क्षेत्र में प्रगति" विषय पर राष्ट्रीय वेबिनार का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि आज के समय में पशुचिकित्सा में रोग निदान एक महत्वपूर्ण पहलू है। मुख्य अतिथि डॉ. बी.एन. त्रिपाठी, उप महानिदेशक, (पशु विज्ञान) भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने कहा कि पशु रोगों के निदान में आशातीत प्रगति हुई है, इसको और अधिक बढ़ावा देने की जरूरत है। डॉ. आर. एस. चौहान, पंतनगर एवं डॉ. के.पी. सिंह बरेली ने व्याख्यान दिया। प्रो. हेमन्त दाधीच निदेशक अनुसंधान ने सभी अतिथियों का स्वागत किया। आयोजन सचिव डॉ. मनीषा मेहरा, जोनल सचिव (पश्चिम क्षेत्र) आई.ए.वी.पी. थी।

बायो एनर्जी के क्षेत्र में उद्यमिता के अवसर पर राष्ट्रीय वेबीनार

पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय नवानियां, उदयपुर के पशुधन नवाचार, ज्ञान एवं उद्यमिता केंद्र द्वारा 10 अक्टूबर को बायो एनर्जी के क्षेत्र में उद्यमिता के अवसर विषय पर राष्ट्रीय वेबीनार का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि नवीकरणीय ऊर्जा के स्रोतों में जैव इंधन का महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है अतः हमें फार्म अपशिस्टों का उपयोग जैव इंधन के रूप में किए जाने के प्रति सचेष्ट रहना होगा। वेबीनार में मुख्य वक्ता उत्तर प्रदेश जैव ऊर्जा विकास बोर्ड के सदस्य श्री पी.एस. ओझा ने जैव ऊर्जा की आवश्यकता पर बल दिया। अधिष्ठाता प्रो. राजीव जोशी ने सभी का स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन केंद्र के सह अन्वेषक डॉ. दीपक शर्मा और डॉ. शिव कुमार शर्मा ने किया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर का ऑनलाइन शिलान्यास समारोह

वेटरनरी विश्वविद्यालय के एक मात्र कृषि विज्ञान केन्द्र नोहर के नए भवन का ऑनलाइन शिलान्यास समारोह 23 अक्टूबर को आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता वेटरनरी विश्विद्यालय के कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने की। इस अवसर पर मुख्य अतिथि नोहर के विधायक अमित चाचाण ने कहा कि नया भवन बनने से किसानों और पशुपालकों को तकनीकी प्रशिक्षण और अन्य सुविधाएं स्थानीय स्तर पर ही उपलब्ध हो सकेगी। समारोह में कुलपति प्रो. विष्णु शर्मा ने कहा कि राज्य में पशुचिकित्सा एवं शिक्षा का एक मात्र कृषि विज्ञान केन्द्र है। समारोह में विशिष्ट अतिथि आई.सी.ए.आर. कृषि तकनीकी अनुप्रयोग संस्थान जोधपुर के निदेशक डॉ. एस.के. सिंह थे। राजुवास के प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो. आर.के. धूड़िया ने ऑनलाइन कार्यक्रम का संचालन कर कृषि विज्ञान केन्द्र के उद्देश्यों की जानकारी दी।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

वी.यू.टी.आर.सी., रतनगढ़ (चूरू)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, चूरू द्वारा 5, 9, 16, 23 एवं 29 अक्टूबर को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 150 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., सूरतगढ (श्रीगंगानगर)

वी.यू.टी.आर.सी., सूरतगढ केन्द्र द्वारा 5, 7, 12, 19, 21 एवं 23 अक्टूबर को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 137 पशुपालकों ने भाग लिया। इसी केन्द्र में आत्मा योजना द्वारा को आयोजित दो दिवसीय मछली पालन प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 28–29 अक्टूबर को किया गया, जिसमें 44 पशुपालकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., सिरोही

वी.यू.टी.आर.सी., सिरोही द्वारा 6, 9, 13, 16, 19 एवं 23 अक्टूबर को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 112 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., बाकलिया (नागौर)

वी.यू.टी.आर.सी., बाकलिया – लाड़नू द्वारा 15, 19, 21 एवं 23 अक्टूबर को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 75 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया। इसी केन्द्र में आत्मा योजना द्वारा आयोजित दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविर का आयोजन 27–28 अक्टूबर को किया गया

वी.यू.टी.आर.सी., कुम्हेर (भरतपुर)

वी.यू.टी.आर.सी., कुम्हेर (भरतपुर) द्वारा 5, 8, 12, 16, 20, 23 एवं 26 अक्टूबर को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 152 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., टोक

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, टोंक द्वारा 1, 8, 15, 19, 23 एवं 29 अक्टूबर को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 186 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., धौलपुर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, धौलपुर द्वारा 6, 9, 13, 16, 19, 23, 27 एवं 29 अक्टूबर को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर में 161 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., लूनकरणसर (बीकानेर)

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, लूनकरणसर (बीकानेर) द्वारा 8, 13, 16, 20 एवं 23 अक्टूबर को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 137 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., कोटा

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, कोटा द्वारा 6, 8, 13, 16, 20, 23 एवं अक्टूबर को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 168 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी.,बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़)

वी.यू.टी.आर.सी., बोजुन्दा (चित्तौड़गढ़) द्वारा 6, 9, 14, 16, 20, 23 एवं 27 अक्टूबर को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविर में 102 पशुपालकों व कृष्णकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., अजमेर

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, अजमेर द्वारा 1, 5, 8, 13, 15 एवं 21 अक्टूबर को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 114 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., झुंझुनूं

पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, झुंझुनं द्वारा 6, 9, 12, 19 एवं 22 अक्टूबर को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 83 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., डूंगरपुर

वी.यू.टी.आर.सी., डूंगरपुर द्वारा 5, 6, 12, 16, 20 एवं 23 अक्टूबर को आयोजित ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 105 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

वी.यू.टी.आर.सी., जोधपुर

वी.यू.टी.आर.सी., जोधपुर द्वारा 5, 9, 13, 16, 19, 22 एवं 27 अक्टूबर को ऑनलाइन पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 133 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 14, 15, 20–21 एवं 28–29 अक्टूबर को एक दिवसीय एवं दो दिवसीय प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 112 किसानों ने भाग लिया।

जैविक पशुपालन पर दो दिवसीय प्रशिक्षण

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् की अनुसूचित जाति उपयोजना के तहत पशुपालकों का जैविक पशुपालन पर दो दिवसीय प्रशिक्षण 26–27 अक्टूबर को आयोजित किया गया। जैविक पशुधन उत्पादन तकनीक केन्द्र के प्रमुख अन्वेषक डॉ. विजय कुमार बिश्नाई ने बताया कि प्रशिक्षण के दौरान जैविक पशुपालन के उद्देश्य, प्रतिमान, जैवविविधता, जैविक चारा, स्वास्थ्य प्रबंधन पर विषय विशेषज्ञों द्वारा जानकारी दी गई। यूनिवर्सिटी सोशल रिस्पोन्सिबिलिटी के तहत गोद लिए गांव जयमलसर के पशुपालकों को डॉ. नीरज कुमार शर्मा ने डेयरी और पोल्ट्री फॉर्म का भ्रमण करवाया।

पंचफूली (लैंटाना कैमरा) के हानिकारक गुणों का पशुओं पर प्रभाव

पंचफूली की विषाक्तता को कुरी और छतियानाशी के नामों से जाना जाता हैं। पंचफूली की विषाक्तता मुख्यतया इसमें मौजूद पेंटासाइक्लिक ट्राईटरपेनोइड लेंटाडीन ए व लेंटाडीन बी नामक सैकेंडरी मेटाबोलाइट के कारण होती है जो कि जड़, पत्ती, तना व अधपके फलों में उपस्थित होते है। अध्ययन के मुताबिक ये लेंटाडीन यकृत एपेथीलियम कोशिका की झिल्ली के कार्य को परिवर्तित कर देते है जिससे सोडियम/पोटेशियम एटीपेज बाधित हो जाता है। इसकी विषाक्तता का प्रभाव पशु के यकृत, पित्ताशय तथा वृक्क सभी अंगों पर पड़ने के कारण पशु की मृत्यु भी हो जाती है। यह रोग बारिश के मौसम में ज्यादा होता है तथा मुख्य रूप से भेड़ व गाय में पाया जाता है। यह पौधा मुख्यतया प्रदेश के दक्षिणी क्षेत्र विशेषकर उदयपुर, सलुम्बर, डुंगरपुर में पाया जाता हैं।

लक्षणः

- इस रोग में पशुओं को खाना पीना बन्द हो जाता हैं।
- आंखों का पीलापन, मूत्र का रंग पीला, चमड़ी का रंग पूरी तरह से पीले रंग में परिवर्तित हो जाती हैं।
- पेट फूलना, खुराक छुटना, बहुत घातक कब्ज का होना, तथा पेट में ठहराव आ जाता हैं। पशुओं को पीलिया हो जाता हैं।
- इस रोग में पशु की पूंछ तथा कान मे तरल द्रव्य या पानी भर जाता हैं। जिससे उसके पूछ व कान में सूजन आ जाती हैं।
- यह सूजन शुरूआत में गर्म और कष्टदायक होती हैं जो बाद में ठण्डी व दर्दरहित हो जाती हैं। पशु की चमड़ी सुखकर कड़ी हो जाती है।

मृत्यु पश्चात अधिकांश पशुओं का यकृत फूला हुआ, हल्का पीले रंग का तथा भंगुर हो जाता है। पित्ताशय का आकार बड़ा तथा गहरे रंग का गाढ़ा द्रव भरकर काला हो जाता है। वृक्क का आकार बड़ा व पीला हो जाता है जो की पीलिया को प्रदर्शित करता है। यकृत में फाइब्रोसिस होकर ऊतक का क्षय हो जाता है।

रोकथाम एवं उपचारः

- पशुओं को वर्षा ऋतु शुरू होने पर दूसरी जगह पर चरने जाने से रोकना चाहिए क्योंकि यह पौधा वर्षा ऋतु में सबसे ज्यादा दक्षिणी राजस्थान में पाया जाता हैं।
- पशुओं का यकृत पीला हो जाता है इसलिए इन्हें लिवरटोनिक देना चाहिए।
- फ्लूइड थैरेपी देनी चाहिए।
- विटामिन का इन्जेंक्शन लगाना चाहिए।
- कब्ज बहुत ज्यादा हो जाती है इसलिए नमक का घोल पिलाना चाहिए।
- अरण्डी के तेल को आधा–आधा लीटर दिन में 2–3 बार पिलाना चाहिए।

डॉ. अनिता राठौड़
सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, नवानियां (उदयपुर)

नस्ल सुधार कार्यक्रम क्यों और कैसे

नस्ल सुधार कार्यक्रम की आवश्यकता

पशुओं में नस्ल सुधार के लिए कम उत्पादन वाले पशु की नस्ल सुधार कर अधिक उत्पादन देने वाली उन्नत नस्ल के पशु तैयार करना।

नस्ल सुधार कैसे?

उन्नत नस्ल के सांड के वीर्य से प्राकृतिक या कृत्रिम रूप से मादा पशु को गर्भित किया जाता है। उस मादा के जो वत्स उत्पन्न होता है जिसमें आधे गुण माता के आधे गुण उन्नत नस्ल के सांड (पिता) के आते है। वे संकर नस्ल के पशु कहलाते है। ये संकर नस्ल के पशु वयस्क होकर अपनी माता से अधिक उत्पादन देना प्रारम्भ करते है।

संकर नस्ल के पशु से लाभ

- ❖ उत्पादन क्षमता अत्यधिक होती है।
- ❖ संकर पशु का ड्राई पीरियड बहुत ही कम होता है।
- ❖ संकर पशु कम आयु में ही उत्पादन देना प्रारम्भ कर देते है।
- ❖ संकर पशुओं में दो व्यात के मध्य का अंतर कम होता है।
- ❖ मादा पशु कम समय में ही अर्थात् 16–18 माह की आयु में ही गर्भित हो जाती है।
- ❖ ये पशु ग्रहण किये गये आहार को उत्पादन में परिवर्तित करते है।

संकर नस्ल प्राप्त करने की विधियाँ

संकर नस्ल प्राप्त करने की दो विधिया अपनाई जाती हैं।

प्राकृतिक विधिः इस विधि के अन्तर्गत मादा पशुओं के झुण्ड में उन्नत नस्ल के सांड को रखा जाता है। मादा पशु के ताव (गर्मी) में आने पर उत्तम नस्ल के सांड द्वारा प्राकृतिक रूप से मादा को गर्भाधान कराया जाता है।

कृत्रिम गर्भाधान विधिः कृत्रिम गर्भाधान विधि को शाब्दिक या सरल शब्दों में यही कह सकते हैं कि मादा पशुओं को गर्भित करने की ऐसी विधि जिसे नर पशु का वीर्य एकत्रित कर गर्मी (ताव) में आई मादा पशु के जननेन्द्रियों में डाला जाता है।

कृत्रिम गर्भाधान के लाभ

- ❖ अवर्गीकृत देशी नस्ल के पशु जिनकी उत्पादन क्षमता कम होती है, की नस्ल सुधार कर अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है।
- ❖ प्रजनन में किसी पशु की वंशावली में उत्तरोत्तर अच्छे गुणों का समावेश कराया जाता है।
- ❖ उस मादा पशु को भी प्रमाणित किया जा सकता है जो चलने–फिरने में असमर्थ हो विकलांग हो, छोटे कद काठी की हो तथा नर से बहुत हल्की हो या जिसे किसी अन्य कारण से नर पशु द्वारा प्राकृतिक विधि से गर्भाधान किया जाना संभव न हो।
- ❖ उन्नत नस्ल का सांड यदि शारीरिक रूप से विकलांग हो तो ऐसी पशु का भी वीर्य एकत्रित कर कृत्रिम गर्भाधान विधि द्वारा मादा पशु को ग्याभिन किया जा सकता है।
- ❖ अच्छी नस्ल और उच्च आनुवांशिक गुणों वाले नर पशु के वीर्य को गई वर्षों तक हिमकृत विधि से सुरक्षित रखकर उपयोग में लाया जा सकता है तथा इसे एक स्थान से दूसरे स्थान पर आसानी से प्रजनन के उपयोग में लाया जा सकता है।
- ❖ नर साड के एक बार वीर्य वरिष्करण से कृत्रिम विधि द्वारा 120–200 पशुओं को ग्याभिन किया जा सकता है।

डॉ. देवी सिंह राजपूत, डॉ. नीरज कुमार शर्मा, डॉ. मनीषा सिंगोदिया
वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

आती सर्दी में रखें पशुओं का ध्यान

पशुओं के लिए सर्दी का मौसम अच्छा माना जाता है क्योंकि सर्दी में पशुपालक इस मौसम में पशुओं को अच्छा पोषण देकर उनके शरीर में पोषक तत्वों की कमी को पूरा करते हैं लेकिन अत्याधिक सर्दी इन पशुओं के लिए हानिकारक भी हो सकती है। जिन पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता कम होती है, उन पशुओं के इस अवस्था में बीमार पड़ने की पूरी संभावना होती है। मौसम का प्रभाव पशुओं के स्वास्थ्य और उत्पादकता पर अवश्य पड़ता है। सर्दी पशुपालकों के लिए बहुत लाभकारी है, क्योंकि इस मौसम में पशुओं का दुग्ध उत्पादन चरम सीमा पर होता है, परन्तु सर्दी के मौसम में कई बार तापमान काफी कम हो जाता है, जिसकी वजह से छोटे बड़े सभी प्रकार के पशुओ के स्वास्थ्य पर प्रतिकुल प्रभाव पड़ता है। ऐसी स्थिति में रोग प्रतिरोधक क्षमता की कमी से पशु विभिन्न संक्रमणों से ग्रसित भी हो सकता है। अतः पशुपालकों को इनके रहन–सहन तथा खान–पान पर ध्यान देना चाहिये तथा पशुओं को तेज ठंड के प्रकोप से बचाना चाहिए। सर्दी के मौसम में छोटे बछड़ो, भेड़ एवं बकरीयों में ठंड लगने, नाक बहने, छींकने तथा निमोनिया का खतरा सबसे ज्यादा रहता है। सामान्यताः सर्द मौसम में पशुओं की उचित देखभाल न होने पर वे श्वसन तंत्र के संक्रमण के शिकार हो जाते हैं। इस रोग में सांस तेज हो जाती है व पशु मुंह खोलकर सांस लेने की कोशिश करते हैं। यदि पशु की उचित देखभाल न की जाए तो उसकी मृत्यु होने की भी पूरी सम्भावना रहती है। पशुओं से अधिक उत्पादन लेने, स्वस्थ रखने तथा उनकी वृद्धि दर को सुचारू बनाये रखने के लिए जरूरी है कि पशुओं को सर्दी के कुप्रभाव से बचायें। पशु से अधिकतम उत्पादन लेने तथा उसका स्वास्थ्य अच्छा बनाये रखने के लिए ठंड में इनकी उचित देखभाल के लिए पशुपालकों को निम्न कार्य करने चाहिए।

- ❖ सर्दी के मौसम में पशुओं के शारीरिक तापक्रम को सामान्य बनाये रखने के लिए अधिक ऊर्जा की आवश्यकता पड़ती है। अतः पशुओं को सूखे चारे के साथ हरा चारा व दाना–बाँटा उसकी शारीरिक आवश्यकता एवं उत्पादन क्षमता के अनुसार सन्तुलित मात्रा में खिलाना चाहिए। सर्दियों में वातावरण में तापमान प्रति डिग्री गिरने पर पशु की ऊर्जा आवश्यकता लगभग एक प्रतिशत अतिरिक्त बढ़ जाती है, जो कि पशु को सर्दी के प्रकोप से बचाने तथा शारीरिक वजन को घटने से रोकने के काम में आती है।
- ❖ सर्दियों में पशु के आहार में अधिक ऊर्जा पैदा करने वाले अवयव जैसे गुड़, चापड़, खल व चूरी को अवश्य शामिल करना चाहिए।
- ❖ पशुओं को शारीरिक श्रम के तुरन्त बाद ठंडा पानी न पिलायें अन्यथा उन्हे निमोनिया की शिकायत हो सकती है।
- ❖ हरे चारे व सूखे चारे का अनुपात सही न रहने तथा अधिक हरा चारा खिलाने से पशुओं में आफरा होने की सम्भावना बढ जाती है। अतः पशुओं को आहार सन्तुलित मात्रा में देना चाहिए।
- ❖ अधिक सर्दी के दिनो में पशुओं को चरने के लिए दोपहर के समय ही भेजें।

- ❖ पशुओं को शीत लहर से बचाने के लिए पशुशाला की खिड़कियों व रोशनदानों को अच्छी तरह से बंद रखना चाहिए। सर्दी के मौसम में ठंडी हवायें उत्तर दिशा की ओर से चलती है। अतः पशुशाला का उत्तरी हिस्सा हमेशा ढका हुआ होना चाहिए। कच्चे बाड़े को खींप, सिणीयां तथा बोरी–टाट से अच्छी तरह से ढ़कना आवश्यक है।
- ❖ नवजात पशुओं को रात्रि में पक्के फर्श पर टाट के बोरे में, धान या घास फूस की पुआल पर बैठाना चाहिए। बडे पशुओं के ऊपर भी बोरा पट्टी बांध देना लाभकारी रहता है, इसके लिए जूट की बोरी का झूल पशु के गर्दन से पूंछ तक लम्बा तथा दोनों साइडो से लटका हुआ होना चाहिए।
- ❖ धूप निकलने पर पशुओं को पशुशाला से बाहर निकालें, धूप में पशु का तापक्रम सामान्य रहेगा, धूप से पशु में विटामिन–डी का संश्लेषण होता है साथ ही पशु के शरीर पर लगे हानिकारक कीटाणु भी नष्ट हो जाते है।
- ❖ पशुओं को सर्दी में बिना आवश्यकता के नहीं नहलायें तथा सायंकाल में भूलकर भी पशु के शरीर पर पानी नहीं डालें।
- ❖ पशुशाला की प्रतिदिन साफ–सफाई करें। पशु के बैठने का स्थान गिला न रहें इसका ध्यान रखना चाहिए। यदि पशुशाला का फर्श पक्का है तो उस पर धान की पराली व अन्य फसलों के कोमल अवशेषों को बिछावन के रूप में काम में लेवें तथा कच्चे फर्श में समय–समय पर ऊपर की 6 से 8 इंच मिट्टी हटाकर उसके स्थान पर साफ एवं सूखी मिट्टी डालें। बालू मिट्टी बिछावन के लिए सबसे उपयुक्त रहती है।

यदि पशुपालक भाई आती हुई सर्दी के मौसम में इन छोटी–छोटी बातों का ध्यान रखेंगे तो वे सर्दियों में होने वाली समस्याओं से न केवल पशुओं को बचा सकते है वरन उनसे अधिक दूध उत्पादन भी प्राप्त कर सकते है।

डॉ. दीपिका धूड़िया
सहायक प्राध्यापक, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

सर्वाधिक सम्भावित पशु रोग पूर्वानुमान–नवम्बर, 2020

पशु रोग	पशु/पक्षी प्रकार	क्षेत्र
मुंह–खुरपका रोग	गाय, भैंस, भेड, बकरी	धौलपुर, सवाईमाधोपुर, जैसलमेर, पाली, बांसवाडद्या, भरतपुर, जयपुर, बीकानेर, दौसा, अलवर, अजमेर, भीलवाड़ा
पी.पी.आर	बकरी, भेड़	पाली, सिरोही, सवाईमाधोपुर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर, सीकर, जयपुर, बीकानेर, चूरू, नागौर
चेचक / छोटी माता रोग)	ऊंट,बकरी, भेड़	बीकानेर, जैसलमेर, बाड़मेर, जालौर, हनुमानगढ़, नागौर, पाली, सिरोही
गलघोंटू	भैस, गाय	जयपुर, भीलवाड़ा, अलवर, दौसा, टोंक, बूंदी, राजसमन्द, सीकर, सवाईमाधोपुर, भरतपुर
न्यूमोनिक पाश्चुरेलोसिस संक्रमण	भैंस, गाय, बकरी, भेड़	सीकर, अलवर, टोंक, जालोर, जयपुर, झुंझुनूं, बीकानेर
फड़किया रोग	बकरी, भेड़	टोंक, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, बांसवाड़ा, जयपुर, बीकानेर, धौलपुर
Enzootic Abortion in Ewes/ (EAE) Chalmydial Abortion	भेड़	बीकानेर, श्रीगंगानगर, हनुमानगढ़, चूरू, सीकर, दौसा
बबेसियोसिस एवं थाइलेरिओसिस	गौवंश	बीकानेर, धौलपुर, बूंदी, चूरू, बांसवाड़ा, हनुमानगढ़, कोटा, बारा
अन्तः परजीवी (गोल–कृमि एवं फीता–कृमि	भैंस, गाय, भेड़, बकरी, ऊंट	भरतपुर, कोटा, धौलपुर, डूंगरपुर, बांसवाड़ा, हनुमानगढ़, प्रतापगढ़, बीकानेर, सीकर, अलवर, चूरू

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करें – प्रो. आर.के. सिंह, अधिष्ठाता, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर एवं प्रो. अन्जु चाहर, विभागाध्यक्ष, जनपादकीय रोग विज्ञान एवं निवारक पशु औषध विज्ञान विभाग, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर।
फोन– 0151–2543419, 2544243, 2201183 टोल फ्री नम्बर 18001806224

सफलता की कहानी

प्रशिक्षण और पशुपालन ज्ञान के उपयोग से निहाल हुआ गुरविंदर सिंह

श्रीगंगानगर जिले के गांव गुरूसर मोडिया के प्रगतिशील डेयरी पशुपालक गुरविंदर सिंह एक किसान परिवार से सबंध रखते है। इनके पास 30 बीघा भूमि है तथा एम.ए. तक की शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात पांरपरिक तौर से पुश्तैनी कृषि करने लगे। गांव में लगे पशुपालन प्रशिक्षण शिविर में प्रशिक्षित होने के पश्चात इन्होंने अपनी इच्छा से पशुपालन व्यवसाय शुरू करने की सोची व पशुपालन को आजीविका के साधन के रूप में अपनाया। सर्वप्रथम 5 गायों से एक छोटा सा डेयरी उद्योग स्थापित किया इसके पश्चात गुरविंदर सिंह पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ के संपर्क में आए तथा यहां से इन्होनें प्रशिक्षण प्राप्त कर डेयरी व्यवसाय प्रारम्भ किया। दुग्ध उत्पादन के साथ–साथ अन्य उत्पादों का भी भरपूर उपयोग करने लगे समय व्यतीत होने के साथ–साथ लगातार केन्द्र के मार्गदर्शन के अनुसार गुरविंदर सिंह ने एक बीघा भूमि पर ज्वार का साइलेज बनाना प्रारम्भ कर दिया। हर साल अपने पशुओं के लिए साइलेज तैयार करते हैं आज इनके पास 30 गाय व 4 भैंसें है यह डेयरी से इतने संसाधन सम्पन्न है कि डेयरी में वैज्ञानिक तौर–तरीकों को अपनानें में पूंजी खर्च कर रहे हैं इन्होनें गायों के लिए पक्का शेड बना रखा है। उम्र के हिसाब से सभी गायों को अलग–अलग रखते है तथा दूध दोहन के लिए मशीनों का उपयोग करते हैं। सभी पशुओं को खुले शेड के नीचे रखते है वह पशुओं के दूध दोहन के लिए अलग शेड बनाये गये है जिससे स्वच्छ दुग्ध दोहन किया जा सके। समय–समय पर वैज्ञानिक पशुपालन एवं नवीन तकनीकों की जानकारी के लिए पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ से प्रशिक्षण लेते रहते है तथा इसके अतिरिक्त दूरभाष के द्वारा भी वैज्ञानिकों से लगातार विचार–विमर्श करते रहते है। गुरविंदर सिंह के अनुसार प्रशिक्षण से उन्हें काफी फायदा हुआ। प्रशिक्षण में टीकाकरण, कर्मीनाशक दवाईयों, खनिज लवणों का उपयोग व साइलेज, अजोला उत्पादन की जानकारी प्राप्त की है तथा इसके उपयोग करने से पशुओं के दूध उत्पादन में वृद्धि हुई है। गुरविंदरसिंह पशुपालन की वैज्ञानिक जानकारियां अन्य ग्रामीणों एवं डेयरी व्यापारियों से साझा करते है। वे पशुपालन में इतने सक्षम हो चुके है कि अपने स्तर पर टीकाकरण व प्राथमिक उपचार के कार्य स्वंय करने लगे है। वह इस सफलता का श्रेय अपने परिवार एवं पशुचिकित्सा विश्वविद्यालय प्रशिक्षण एवं अनुसंधान केन्द्र, सूरतगढ़ को देते हैं। **सम्पर्क : गुरविंदर सिंह, गांव गुरूसर मोडिया**

प्रसार शिक्षा निदेशालय, राजुवास, बीकानेर

निदेशक की कलम से...

हरे चारे के उत्पादन और संरक्षण के उपाय करें

प्रिय किसान व पशुपालक भाईयों व बहनो।

राजस्थान भौगोलिक एवं पारिस्थिकीय दृष्टि से विविधताओं वाला प्रदेश है। क्षेत्रफल की दृष्टि से राजस्थान देश का सबसे बड़ा राज्य है। विविध पशुधन संपदा का होना भी इस राज्य की एक विशेषता है। गाय, भैंस, भेड़, बकरी जैसे दुधारू पशुओं की बहुतायत के कारण ही राजस्थान दुग्ध और ऊन उत्पादन में अग्रणी राज्य है। कम वर्षा और अकाल जैसी परिस्थियां बनते ही पशुओं के लिए दाना, चारे की किल्लत महसूस होने लगती है और वर्ष पर्यन्त हरे चारे की कमी बनी रहती है। चारे की उपलब्धता और मांग में अन्तर बढ़ने के साथ ही पशुधन के लिए खान–पान का संकट उत्पन्न हो जाता है। आम किसान और पशुपालक ऐसी परिस्थितियों में पशुपालन से मुंह मोड़ने लगता है जिसका सीधा असर राज्य की अर्थव्यवस्था पर पड़ता है। ऐसी परिस्थितियों में यदि अच्छे मौसम में प्रचूर मात्रा में हरे चारे को साइलेज बनाकर और सुखा कर ''हे'' के रूप में संरक्षित किया जा सकता है। साइलेज बनाने के लिए धान वाली फसलों जैसे मक्का व गेहूं आदि के हरे चारे को 30–40 दिन के लिए एक गडढ़े में अच्छी तरह से दबाकर भर देते है। गडढ़े में भरने से पहले चारे की कुट्टी की जाती हैऔर गडढ़े को गीली मिट्टी या गोबर के लेप से अच्छी तरह से बंद कर देते हैं। इसमें हरे चारे का किण्वन द्वारा परीरक्षण होता हैं। एक वर्ग मीटर स्थान में लगभग 6 क्विंटल साइलेज बनाया जा सकता है। उत्तम क्वालिटी का साइलेज बनाने के लिए प्रति क्विंटल चारे में 3 किलोग्राम गुड़ का शीरा, एक किलोग्राम यूरिया व आधा किलोग्राम खनिज मिश्रण भी मिला सकते है। इस प्रकार से संरक्षित चारे में प्रचूर मात्रा में पोषक तत्व व विटामिन पाये जाते है। ''हे'' बनाने के लिए दलहनी फसलों व रिजका की हरी व पत्तियों वाली टहनियों को धूप में सूखाया जाता है, और सूखने के बाद भण्डारण कर देते है। भण्डारण से पूर्व यह जांच ले कि 'हे' में शुष्क पदार्थ की मात्रा 85–88 प्रतिशत हो। 'हे' के रूप में चारे में विटामीन डी व पोषक तत्वों की मात्रा अच्छी रहती है तथा यह खाने में स्वादिष्ट होता है। जई व रिजका के चारे से उत्तम क्वालिटी का 'हे' बनता है। तूड़ी के बजाय 'हे' में पोषक तत्व अधिक मात्रा में होते हैं। इस तरह उपलब्ध हरे चारे का सही उपयोग व सरंक्षण किया जाये तो पशुपालन लाभदायक हो सकता है।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर (मो. 9414283388)

मुस्कान !

RAJUVAS e-पशुपालक चौपाल

।।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।।

माह के प्रत्येक द्वितीय एवं चतुर्थ बुधवार को
समय : दोपहर 12.00 बजे से 1.00 बजे तक

राजुवास के आधिकारिक फेसबुक पेज से सीधा प्रसारण

LIVE https://www.facebook.com/RAJUVASOfficialWebPage

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) आर. के. धूड़िया
संपादक
डॉ. दीपिका धूड़िया
डॉ. मनोहर सैन
दिनेश चन्द्र सक्सेना
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

.....

.....

.....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया

पशुचिकित्सा व पशु विज्ञान की जानकारी प्राप्त करने के लिए राजुवास के टोल फ्री नम्बर पर सम्पर्क करें। 1800 180 6224